Do You Bury Your Face in the Water?

शिक्षण पत्र (भाग 3)
डेरेक प्रिंस द्वारा

In this Teaching Letter series on the theme of *Our Value, Our Worth*, we are looking at what the Bible has to say about the human personality.

As I shared in the second installment, the Bible is a unique kind of *mirror*, which shows us how each aspect of our personality is intended to function. Correctly using God's *mirror* can save us from much inner frustration, disharmony, and failure.

How God Sees Us

हा ल ही में, प्रभु के वचन यशायाह ५५:८-६ से मैं काफी प्रभावित हुआ।

> "क्योंकि यहोवा कहता है, मेरे विचार और तुम्हारे विचार एकसमान नहीं हैं, न तुम्हारी और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरीऔर तुम्हारी गति में और मेरी और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाशऔर पृथ्वी का अन्तर हैं।"

हमारे विचारों की दूरियों के विषय में सोच रहा था, तब मुझे गिदोन और उसकी सेना के बारे मे याद आया जो न्यायियों के ६-८ पदों में दिखाया गया हैं।

इस वक्त इस्त्राएल पाप और मूर्तिपूजन में गिर गया औरपरमेश्वर का न्याय उन पर आ गया और हर वर्ष मिद्यानियों कीसेना आक्रमण कर उन्हें और उनकी फसल को लूट ले जातें थें।

एक दिन, जब गिदोन अपना अनाज तैयार कर रहा था औरमिद्यानियों से छिपाने की कोशिश कर रहा था तभी परमेश्वर का दूतप्रकट हुआ और उससे कहा,

> "हे शूरवीर सूरमा" (न्यायियों ६-१२)।

स्पष्ट रुप में परमेश्वर ने गिदोन को अलग नज़रिये से देखा जो उसके अपने नज़रिये से भिन्न था। गिदोन ने अपने आपको एक युवा, कमजोर और अप्रभावशाली रुप में देखा था। परन्तु परमेश्वर ने उसे "हे शूरवीर सूरमा" करके पुकारा।

Seeing Ourselves Rightly

स्पष्ट रुप में परमेश्वर ने गिदोन को अलग नज़रिये से देखा जोउसके अपने नज़रिये से भिन्न था। गिदोन ने अपने आपको एकयुवा, कमजोर और अप्रभावशाली रुप में देखा था। परन्तु परमेश्वरने उसे "हे शूरवीर सूरमा" करके

पुकारा।

जैसे मैंने पहले कहा, हमें यह चिंता नहीं करनी चाहिये कि हमअपने आपको कैसे देखते है परन्तु हमे इस बात पर ध्यान देनाचाहिये कि परमेश्वर हमें किस रुप में देखता है। यदि मसीह में हमसबने "नये मनुष्यत्व को पहन लिया हैं जो परमेश्वर के अनुसारसत्य की धार्मिकता, और पवित्रता में सृजा गया है" (इफिसियों४:२४)।

हम यदि अपने आप को इस प्रकार देखें तो अवश्य हीहमारे इस युद्ध के दौरान काफी प्रभाव पड़ेगा। परमेश्वर ने गिदोनको आज्ञा दी कि वह इस्त्राएल को मिद्यानियों से युद्ध करने में नेतृत्वकरे।

गिदोन ने सेना को हरोद के सोते के पास इकटठा किया जिसकेउत्तर दिशा में मिद्यानियों ने पड़ाव डाला था।

क्या गिनती थी दोनों तरफ की?

1. गिदोन की सेना ३२,०००
2. मिद्यानियों की सेना १,३५,०००

और गिदोन ने ३२,००० पुरुषों के साथ (देखें न्यायियों ७:३)मिद्यानियों की सेना का सामना किया (देखें न्यायियों ८:१०) ।

परमेश्वर ने गिदोन को निर्देश दिया कि जो कोई भी भयभीतहै उसे वापस भेज दिया जाए। परिणाम स्वरुप २२,००० पुरुष जनवापस लौट गये और गिदोन के साथ रह गये केवल १०,००० पुरुष। यहाँ तक कि उस के पास प्रति तेरह के लिये एक का अनुपातथा।

परन्तु परमेश्वर फिर भी न रुका! उसने गिदोन से कहा,

> "लोग अब भी अधिक है"।

फिर परमेश्वर ने गिदोन को निर्देशदिया कि वह अपने लोगों को सोते के पास नीचे ले जाए, जहाँ वहउन्हे उनके पानी पीने के तरीके से परख सके। वह सब जो घुटनेटेककर पानी पीये उन सब को अलग कर दिया गया। जिन्होने मुहँमें हाथ न लगाते हुए, कुतों की नाई पानी पिया वे चुन लिये गये(देंखे न्यायियों ७:४-७) ।

यह परख केन्द्रित करती है एक विशेष स्वभाव को जो हैःचौकन्ना।

एक योद्धा के व्यक्तित्व का निर्माण “एक महत्वपूर्ण स्वभाव की आवश्यकता”

पहला चित्र उनका है जिन लोगों ने साधारण रुप से पानीपीयें। उन्होंने बायें हाथ से ढ़ाल को नीचे रखा और घुटने टेककरमुँह को पानी से लगाकर पीने लगे। इस स्थिति में, वे एकआकस्मिक आक्रमण में आसानी से चोट खा सकते थे। वे नहीअपनी ओर बढ़ते दुश्मन को देख सकते और न ही वे अपनेहथियार को इस्तेमाल करने के लिये तैयार है। जब तक वे अपनेआप को तैयार करते दुश्मन उनपर हावी हो जाता।

उनका क्या जिन्होनें कुत्तों की नाई चपट-चपट कर पानीपीया? जब एक कुत्ता पानी पीता है, वह अपनी नाक पानी में झालेबगैर अपनी जीभ के द्वारा पानी चारों तरफ छिड़क जाता हैं।

फिर हम किस प्रकार चित्रित करें उन जनों का जो हाथ मेंपानी चपट कर पीयें? न्यायियों ७:६ कहता है कि, वे अपने हाथ कोकटोरा आकार मे बनाकर पानी को अपने मुँह तक ले गये।

और अपनी बरछी या तलवार जिसेआसानी से उठाकर इस्तेमाल कर सके। दुश्मन को कोई मौका न थाकि एकाएक उनके बिन देखे उन पर आक्रमण कर सकें।

गिदोन के सिर्फ ३०० जन इस दूसरी परख मे चुन लिए गये।वे १,३५,००० मिद्यानियों का सामना कर रहे थे। अब रह गये प्रति४५० मे १।

Against the Odds

मैं चित्रित कर सकता हूँ कुछ जनों को जिन्हें वापस भेज दियागया, वे स्वयं कहने लगे, "चलो, परमेश्वर का धन्यवाद हो कि हमअलग हुए ! वह गिदोन का दिमाग ठिकाने पे नही हैं। इससे क्या फर्कपड़ता है कि कोई पानी किसी भी तरह से पीये? देखें क्या होता हैउसका और उन बेवकूफों का जो उसके साथ हैं।"

आखिरकर गिदोन और उसके तीन सौ जनो ने एक ऐसाआकस्मिक आक्रमण किया जिससे मिद्यानी उलझन में पड़ गयें।उसके पश्चात् इस्राएली गिदोन के पीछे हो लिये और मिद्यानियों परपूर्ण विजय प्राप्त की।

यह पूरी बात यह दर्शाती है कि परमेश्वर के मार्ग हमसे कितनेभिन्न हैं।

अगर गिदोन को देखें तो वह स्वयं इस निष्कर्ष में रहा

होगा कि, "मेरे साथ बहुत कम लोग हैं। मुझे अपनी सेना की संख्याबढ़ानी चाहिए।" परन्तु परमेश्वर का नज़रिया उससे भिन्न था।

वह यह कि "जो लोग तेरे साथ है वे काफी है।" अन्त में गिदोन के पाससौ में से एक था जो उसके साथ जुड़े थे। परन्तु परमेश्वर के लियेयह प्रश्न नहीं उठता है कि “कितने लोग?", बल्कि यह कि "किसप्रकार के लोग?"

व्यक्तिगत मूल्यांकन

इस घटना के आधार पर हमें स्वयं एक व्यक्तिगत जाचँ करनीचाहिए।

1. परमेश्वर की सेना में जो आज इकट्ठा हो रही हैं, क्या मैं उन चुनें हुओं में से हूँ?
2. या मैं उन २२,००० में से हूँ जो डर को अपने जीवन में लाये ?
3. या उन ६,७०० लोगों में जिन्होने प्यास

बुझाने के लिए अपने हथियार नीचे डालकर, अपने मुँह को पानी मेंदिये ?

यह बहुत आसान व स्वाभाविक है कि हम अपने मुहँ कोअपने दैनिक जीवन में गढ़ा दें; या हम अपने व्यवहारिक जरुरतों कोपूरी करने में खो जाते है; या हम भूल जाते है कि हम उन अन्धकारकी ताकतों से एक आत्मिक लड़ाई लड़ रहे है जो घात लगाये बैठेहै और इस ताक में है कि हम किस वक्त तैयार नहीं है।

हर परिस्थिती में चौकसी को कायम रखने के लिए जरुरत है सचेत होनाऔर व्यक्तिगत अनुशासन रखना । फिर भी नया नियम हमें यहचेतावनी देता है

कि "सचेत रहो;

> क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़खाये" (१ पतरस ५:८)।

अगर हम इस चेतावनी को नज़रअंदाज कर एक योद्धा के व्यक्तित्व का निर्माण दें तो हम सूक्ष्मबुद्धि होने में पराजित होते है और हमें शैतान के आक्रमण का पहले से ज्ञात नहीं होता।

Finding a Balance

उदहारण के रुप में हमारे अवकाश के विषय ही देखिये। मैंनेऔर रुत ने देखा कि हम यह सेवकाई प्रभावशाली रुप में नहीं लेजा सकते अगर समय समय में हम कुछ दिनों का अवकाश नहींलेते। (हमारा अवकाश हकीकत में यह था कि परमेश्वर के साथकुछ वक्त बिताना)। परन्तु मैनें एक बात सीखी कि शैतान कभीछुट्टियाँ नहीं लेता।

जब हमें लगता है कि हमें कुछ आराम की सख्तज़रुरत हैं, तब शैतान हम पर ऐसे दबाव डालता है जिसका हमे पूर्वज्ञान नहीं हो पाता और हम पकडे जाते, क्योंकि हम हथियार तुरन्तउपयोग में लाने में सक्षम नहीं होतें।

इसका मतलब, क्या हमने कभी छुट्ठियाँ नही ली? बिल्कुलनहीं! इसका मतलब यह है कि हमने उन आराम के वक्त भी अपनामुँह पानी में नही गड़ाये; हमने अपने हथियार नीचे नही ड़ाले। हमनेयह सीखा कि इन वक्तों में हमे ज्यादा चौकस रहना चाहिए।

यह एक उदाहरण है जिसे हम और भी जगहों पर उपयोग मेंले सकते है जैसे: पारिवारिक संबध में, व्यवसाय की गतिविधियों में,खास उत्सवों में या शिक्षा के मौकों में। हम इन सब में शामिल होसकते हैं, हमारे मुँह को इनमे गड़ाये बिना।

याद रखें, गिदोन की सेना बहुत ही कम थी लगभग चार सौ केमुकाबले एक! क्या आज यह परिमाण अलग है?

What About You?

एक बार हम चौकसी की परख में चुन लिये जाये, तो यहसिर्फ एक शुरुआत हैं।

अब हम देखेंगे हमारी तैयारी हमारे व्यक्तित्वको किस प्रकार प्रभावित करती है और स्पष्ट करती है हमारे अगलेक्रम के लिए जो एक सैनिक प्रकृति का निर्माण करती हैं।

Do you want to be renewed by seeing yourself as God sees you? Do you want to reach out in faith to be strengthened like Gideon, in the power and might of the Lord? Let's ask the Lord to accomplish this in our lives right now:

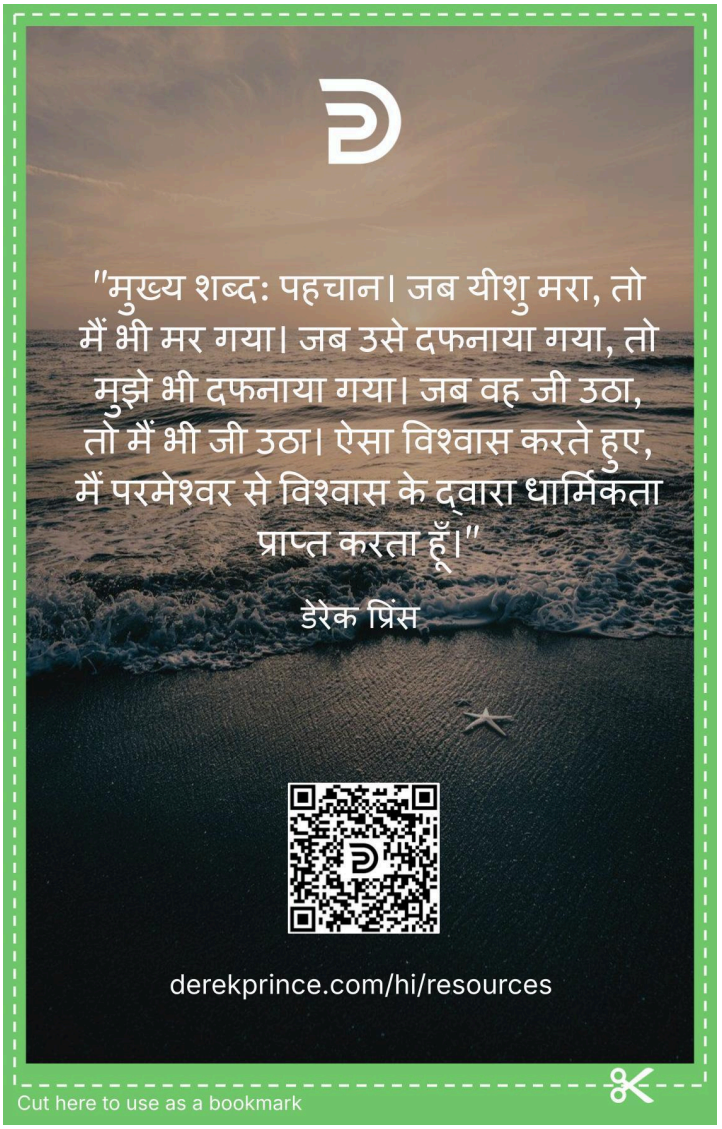

शिक्षण पत्र

प्रतिलेख: TL-L123-100-HIN
आखिरी जानकारी: 26 Mar 2026
वेबसाइट: derekprince.com/hi/resources